# हर घर एक पाठशाला...

**हर घर एक पाठशाला है अर्थात सीखना सिर्फ स्कूल कॉलेज गुरुकुल तक ही सीमित नहीं है घर के माता-पिता, दादा दादी, नाना नानी, बड़े छोटे हर सदस्य एक दूसरे के शिक्षक होते हैं घर में ही बच्चों को संस्कार भाषा अनुशासन और जीवन का पहला पाठ सीखने को मिलता हैं जिस प्रकार एक बीज जब पौधा बनता है तो माली उस नन्हे पौधे को सहलाता है सहारा देता है और किसी धागे या रस्सी से बॉधकर उसे आगे बढ़ाने के लिए कार्य करता और निरंतर फिर देखभाल और वह नन्हा पौधा रस्सी के सहारे व सहयोग से ऊंचा बढ़ता है और एक दिन बट वृक्ष बनकर वह छाया और फल सबको देता है।**

यदि वह माली उस नन्हे पौधे को छोटे में ही सहारा नहीं देता, तो आज वो बट वृक्ष नहीं बन पाता हर घर की पाठशाला का भी यही उद्देश्य होता है की हर एक नन्हे बच्चे को जो आगामी जन्म से लेकर 5 वर्षों तक बिना किसी पाठशाला में गए घर पर ही रहकर जीवन का वह बहुमूल्य पाठ सीखने वाला है जो उसे घर के बड़े, बुजुर्ग, हम उम्र प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष से देने वाले हैं हर घर एक पाठशाला शिक्षा की पहली सीढ़ी है जहां उस अबोध बच्चे को घर के बड़े, छोटे-छोटे शब्दों से व्यवहारिक ज्ञान से अपनी गतिविधि से कुछ सीखना चाहते हैं और वह अबोध बच्चा सीखता व गतिविधि करता है लेकिन आज के इस परिपेक्ष में घर के सदस्यों के पास समय का अभाव और बच्चों के प्रति आत्मीय लगाव कम होता जा रहा है और आज घर के सदस्य बच्चों को व्यस्त रखने के लिए मोबाइल जैसी वस्तु हाथ में पकड़ा दी जाती है ताकि बच्चा बचपन से ही मोबाइल का उपयोग करना सीखे और व्यस्त रहे तथा घर के बड़े लोग अपने अन्य कार्य कर सकें और उन्हें बच्चा परेशान न करे अर्थात उन्हें आज बच्चा बोझ लगने लगा है यही कारण है कि आज बच्चा तकनीकी वस्तुओं के प्रति ज्यादा आकर्षित होने लगा तथा बच्चों माता-पिता और घर के बड़े बुजुर्गों से प्यार न मिलने के कारण अब बच्चे कहीं और प्यार की तलाश में दिशा हीन होते जा रहे जो कभी बचपन में धूल मे खेल खेला करते थे जैसे गिल्ली डंडा, छापे, कंची, लुका छुपी, चीलकाट, दौड़ भाग, पेड़ों पर चढ़ने वाले खेल, ऑखों पर पट्टी बांधकर ढूंढना, ततोड़िया, सबसे बड़ी बात हर मौसम के अनुसार जमीनी खेल होते जिन्हें बच्चे मजे से खेलते थे और ऐसे अनेक खेल है जिनमें भविष्य का अनुभव छुपा होता था जिसमें शारीरिक, मानसिक प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले खेल होते थे वो सारे खेल आज बंद होते जा रहे हैं और बच्चा तकनीकी खेल घर में बैठकर खेल रहा है और जिससे उसकी मानसिक और शारीरिक क्षमताओं की कमी होती जा रही है क्योंकि हमने बचपन से ही बच्चे को प्रकृति से जुड़ाव रखने वाले खेल न खिलाते हुए उसे घर पर रहकर खेल खिलाना प्रारंभ कर दिए शिक्षा का अर्थ सिर्फ विद्यालय से प्राप्त डिग्री लेना नहीं है अगर आपने कागज पर डिग्री ले ली लेकिन आपके पास जीवन रूपी अनुभव और ज्ञान नहीं है तो ऐसी डिग्री सिर्फ कागजों तक ही सीमित होकर रह जाती है।

हमें यह सोचना पड़ेगा कि हम कागजी डिग्री लेना चाहते हैं या ज्ञान रूपी डिग्री को प्राप्त करना चाहते हैं आज बच्चों के पास कागज के रूप में प्रतिशत वाली डिग्री तो है परंतु उनके पास ज्ञान रूपी अनुभव नहीं है यही कारण है कि आज उच्चतम प्रतिशत प्राप्त करने के पश्चात भी बच्चा संतुष्ट नहीं है और वह अपनी जीवन की लीला को समाप्त कर लेता है क्योंकि उसे ऐसा लगता है कि सिर्फ मेरे पास प्रतिशत की डिग्री इतनी नहीं प्राप्त हुई जितना मैंने चाहा था इसलिए मैंने अपनी जिंदगी को समाप्त कर लिया यह चिंता का विषय है जबकि आज बीस साल पास तृतीय श्रेणी में पास या कहते थे मेरी गुड सेकेंड बनी है और बहुत खुश होते थे मतलब उनके पास प्रतिशत का कोई तनाव नहीं रहता था पास होना होने में ही बहुत प्रसन्न थे बामुश्किल एक या दो की फर्स्ट डीविजन बनती थी वो भी पेपर रोल नंबर आते जिसका सबके बेसब्री से इंतजार रहता था।

लेकिन हमने बच्चों को किताबी रूप में गुलाम बनाते हुए प्रतिशत की ओर उसे इतना आकर्षित कर दिया, इतना ज्यादा प्रेरितकर दिया कि उसके मन मस्तिष्क पर ज्ञान रूपी प्रतिशत की अमिट छाप तो है लेकिन ज्ञान का अनुभव नहीं है जो हम सबके लिए विचारणीय है कि आखिर हमारा दायित्व और हमारी जिम्मेदारी कहॉ समाप्त हो गई। घर में पहली गुरु मॉ को माना गया है जहां मॉ की लोरिया, पिता की सीख बच्चों को व्यस्त रखने के पर्याप्त था जहां बच्चों को अनुभव रूपी ज्ञान या कुछ ऐसी चीज सिखाई जाती थी जहां बच्चा अपने आप को अनुभवी रूप से सीखने के लिए व्यस्त रख सके, जहां बचपन से ही बच्चे को सच बोलना, बड़ों का सम्मान करना, मेहनत करने की सीख, घर के बड़े बुजुर्गों के द्वारा दी जाती थी जो आथ धीरे-धीरे समाप्ति की कगार पर है यह हम सबके सामने चिंता और विचारणीय प्रश्न है?

यदि हम अतीत के इतिहास की कहानियों को टटोलते हैं तो हम पाएंगे कि हमारे देश में सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और अब्दुल कलाम जैसे अनेक क्रांतिकारी हुए जिन्होंने अपनी कम उम्र में राष्ट्रभक्ति से आज तक अपने आपको किताबों में जिंदा रखा है और आज हम उनके उदाहरण देते हैं, उनसे सीख लेते हैं। आज का युग तकनीकी युग है इसमें कोई शक, संदेह नहीं है आज मोबाइल के युग में परिवार का अपना एक अलग दायरा और समय ज्यादा व्यस्त है घर में यदि चार सदस्य हैं तो चारों मोबाइल लेकर घर के चार कोनों में बैठकर मोबाइल चलाते हैं लेकिन घर में एक दूसरे से खुलकर मस्ती भरी हठखेलिया, बातचीत नहीं करते घर में परिवार के सदस्यों के बीच चर्चा न करना, एक साथ बैठकर भोजन न करना वल्कि भोजन करने में भी व्यक्ति को मोबाइल देखना पड़ता है कहॉ जा रही है आज हमारी चेतना और किस दिशा में हम अपने आप को लेकर जा रहे हैं यह बहुत ही चिंतन, मनन करने का विषय है।

हमें अतीत को याद करना होगा जब हम भोजन करने बैठा करते थे हमारे बड़े बुजुर्ग हमें यह शिक्षा देते थे कि भोजन करते समय बातचीत नहीं करना है एकाग्रता के साथ चबा-चबा कर भोजन का सेवन करना है क्या हम आज ऐसा कुछ कर पा रहे हैं शायद नहीं..? आज बच्चों को जब तक आप मोबाइल नहीं दिखाते तब तक वह भोजन नहीं करता है, अर्थात हर घर एक पाठशाला जो कभी हमारे हर एक घर में हुआ करती थी आज हर घर एक मोबाइल की पाठशाला प्रारंभ हो चुकी है अगर आज हम फिर से अपने घर को हर घर पाठशाला बना लें तो यकीन मानिए हमारा परिवार, हमारे परिवार के सदस्य, हमारा समाज और हमारा देश निश्चित बदल जाएगा घर की चार दीवारों के बीच की जो पाठशाला हुआ करती थी जहां हम अपने बड़ों से सीख लिया करते थे एक साथ एक लाईन में रोज शायम समय में प्लास्टिक के लंबे बड़े थैले से किताब निकाल कर जोर-जोर से पढ़ते थे और घर बड़े हमारी पढ़ाई सुनते थे और गलत पढ़ने पर टोकते और सही बताते थे। माता-पिता बड़े बुजुर्गों का डर हुआ करता था आज वह धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है घर में माता-पिता ने मारना, डांटना बंद कर दिया इसके कारण बच्चों की सहनशीलता और धैर्यता समाप्त होती जा रही है शासन, प्रशासन और आधुनिक युग के पालको ने शिक्षकों के हाथ से डंडे और मुंह से तिरस्कार वाले शब्द छीन लिए इस कारण से आज बच्चों में सहनशीलता निम्न स्तर की ओर जा रही है। आज बच्चा को यदि हम कुछ कहते हैं तो वह सुन नहीं सकता, क्योंकि उसके अंदर बचपन से ही जो धैर्य का बैंक हुआ करता था वह अब बचा नहीं हमें यह नहीं भूलना चाहिए हमारे देश में ऐसे कई महापुरुष हुए जिन्होंने मेहनत मजदूरी अखबार बेचकर चाय बेचकर प्रशासनिक सेवाओं के साथ-साथ राजनीतिक क्षेत्र का एक लंबा सफर तय किया और देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री और अन्य पदों पर पहुंचे हैं।

घर का संस्कार, बच्चों की दिशा और दशा दोनों तय करती है लेकिन घर से मिलने वाली जो महत्वपूर्ण तीन शिक्षाएं हैं नैतिक शिक्षा, व्यवहारिक शिक्षा और भावनात्मक शिक्षा आज वह धीरे-धीरे समाप्ति की कगार पर है जिस प्रकार पृथ्वी से कुछ जीव, जंतु विलुप्ति होने की कगार पर है ठीक वैसे ही हमारे परिवार से यह तीन शिक्षाएं धीरे-धीरे विलुप्ति की कगार पर है माता-पिता की जो भूमिका होना चाहिए वह माता-पिता अपनी भूमिकाओं से पीछे हटने लगे क्योंकि एक समय में वही पहले शिक्षक हुआ करते थे और उनकी सीख जन्म से लेकर मृत्यु तक चला करती थी परंतु आजकल के माता-पिता के पास दौलत तो है लेकिन समय नहीं है यही कारण है आज परिवार कुटुंब से एकल परिवार की ओर जा रहे हैं मैं और मेरा जो कभी %हमसे% %हमारा% था आज सिर्फ मैं तक सीमित होता जा रहा है और यह मैं व्यक्ति और परिवार को तोड़ने की कगार पर बढ़ता जा रहा है हर व्यक्ति विद्यालय से पढ़ा लिखा होना जरूरी है परंतु घर से सीखा हुआ होना भी उतना ही जरूरी है। आज हमें ऐसा लगता है कि हमने एक बच्चे को वस्तु की तरह समझ कर रखा है अर्थात शोषण करना उपयोग करना आज हम बच्चे को विद्यालय भेजते हैं और हम चाहते हैं विद्यालय हमारा मनपसंद का हो, फिर इसके बाद हम उसकी कोचिंग लगा देते हैं यदि विद्यालय मनपसंद का है तो फिर कोचिंग की आवश्यकता क्यों..? बच्चा, कोचिंग से आया नहीं कि उसको विद्यालय और कोचिंग का काम करना है, उसे इस क़दर व्यस्त कर दिया की उसकी स्वयं की स्वतंत्रता कुछ नही है, बच्चें की दिनचर्या, विद्यालय से प्रारंभ होकर रात सोने गृह कार्य तक चलती रहती है समय ही नहीं है बच्चे को अपने स्वयं के बारे में और माता-पिता के साथ बैठकर चर्चा करने का हमने बच्चों को एक उपयोगी वस्तु समझकर चरखी बना दिया और यही कारण है कि बच्चा निरंतर सिर्फ और सिर्फ अपने आसपास बस्ता और बस्ते में रखी किताब तक सीमित हो गया हर माता-पिता की आकांक्षा और इच्छा इतनी प्रबल हो चुकी है कि हर माता-पिता चाहते है कि हमारा बच्चा राष्ट्पति, प्रधानमंत्री, कलेक्टर, अभियंता बैज्ञानिक ..आदि आदि..वो भी प्रतिशत से, आज बच्चे को प्रतिशत अधिक से अधिक लाने का इतना दबाव है कि सिर्फ वो बच्चा ही जानता है, जबकि वास्तविकता में जीवन में सफलता का मूल मंत्र किसी भी व्यक्ति के द्वारा दिया गया डेडिकेशन, डिवोशन और डिटरमिनेशन है।

इतिहास के पन्नो को यदि हम पलट कर देखते हैं तो पाएंगे की सफल व्यक्ति के पीछे उसका प्रतिशत नहीं उसकी अटूट भक्ति और परिश्रम है। मैं सहमत हूँ कि हर बच्चे को उच्चतम प्रतिशत तक पहुँचना चाहिए लेकिन इसके लिए जरूरी नहीं है कि वह सुबह जागने से लेकर रात सोने तक सिर्फ और सिर्फ किताबों से ही लिपटा रहे उसे अपना समय भी हमें देना पड़ेगा उसके मन की बात भी जानना पड़ेगी, उसकी समस्या और समाधान भी करना पड़ेगा, लेकिन जब तक हम उसे इन सब चीजों से समय नहीं देंगे तब तक वह अपने मन की बात को नहीं कह सकता उसे यह बताना पड़ेगा कि बेटा प्रतिशत महत्वपूर्ण नहीं है, पुस्तक का ज्ञान महत्वपूर्ण है इसलिए तुम्हें ज्ञान लेना है, और यदि तुम्हारे पास पुस्तक का ज्ञान है तो? आप यकीन मानिए बच्चे प्रतिशत स्वतः ही मन पसंद बन जाएंगे। जो बच्चे शिक्षा से दूर या बहाना बना रहे हैं तो आप देखेंगे कि ऐसे बच्चों का व्यवहार सामान्य बच्चों से अलग होता है या जो बच्चे विद्यालय जा रहे परंतु विद्यालय की किसी भी गतिविधि में अपनी सहभागिता नहीं कर रहा न ही कक्षा में उसका ध्यान न गृह कार्य करके लाने पर तथा कुछ भी पूछने पर झूठ बोलना ऐसा बच्चे का व्यवहार धीरे-धीरे आक्रामक, समाज-विरोधी और मानसिक कुंठा से भरे होने लगते है जबकि बच्चों की शिक्षा, उनके खिलाफ होने वाले अपराध, बाल आत्महत्या और उन्हें सुधार गृह भेजे जाने से जुड़े विषय बेहद ही संवेदनशील और गंभीर होते हैं। इन मुद्दों को समझने के लिए कानून, समाज और बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के पहलुओं को देखना जरूरी है कि आखिर बाल्यकाल में अपराध क्यों हो रहा है जबकि भारत में 6 से 14 वर्ष के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार है हर बच्चे को बिना किसी भेदभाव के स्कूल जाने का हक है फिर चूक कहॉ हो रही है जैसा की हम जानते हैं मानसिक विकास में शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि बच्चे का संपूर्ण विकास करना है। बाल श्रम निषेध 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम करवाना कानूनन अपराध है। बाल आत्महत्या का मुख्य कारण पढ़ाई का अत्यधिक दबाव, परीक्षा का डर, माता-पिता की उम्मीदें, बच्चों का बच्चों को चिढ़ाना और अकेलापन है। ऐसी स्थिति में बच्चों के व्यवहार में बदलाव जैसे अचानक चुप रहना या चिड़चिड़ा होना पर ध्यान दें इसके साथ ही बच्चों से निरंतर हंसी मजाक एवं नियमित कक्षा कक्ष की गतिविधियों को पूछना व संवाद जरूरी है बच्चों पर नंबर लाने का दबाव बनाने के बजाय उनसे खुलकर बात करें और उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें। हम बच्चों के शारीरिक शारीरिक स्वास्थ्य का स्वास्थ्य पर तो ध्यान देते है परंतु मानसिक स्वास्थ्य पर उतना ध्यान नहीं देते जबकि हम सबको चाहिए कि बच्चों को मानसिक स्तर पर मजबूत करें ताकि वह हर चुनौतियों से लड़ सके, सामना कर सकें और विपरीत परिस्थितियों में अपने आप को सकारात्मक कैसे बनाएं और परिणाम अपने पक्ष में करने का प्रयास करें जो की सबसे महत्वपूर्ण है यदि हमने बच्चों को मानसिक स्तर पर मजबूत बना लिया तो छात्र जीवन मे होने वाली आत्महत्याओं को हम काफ़ी हद तक रोक सकते। यदि हम बच्चों की आत्महत्या के पीछे के कारणों को जानें जिसमें एकेडमिक इसस्ट्रेस, नंबर और रैंक पाने की होड़, करियर च्वाइस कॉलेज और स्कूलों में की जाने वाली रैगिंग, जाति, धर्म, लिंग के आधार पर भेदभाव, कोचिंग ट्यूशन और हायर एजुकेशन की फीस न चुका पाना या समस्या का सामना करना, बदलती पारिवारिक संरचना जिसमें बच्चों को पारिवारिक सहयोग मानसिक रूप से जो मिलना चाहिए वह न मिल पाना, सामाजिक उदासीनता एवं माता-पिता व शिक्षक को बच्चों की मानसिक विकार का पता सही समय पर न लग पाने के कारण आत्महत्या जैसी घटना निरंतर बढ़ती जा रही है।

यदि हम नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो से प्राप्त आंकड़ों की बात करें तो 2014 से जनवरी 2026 तक आत्महत्या करने वाले बच्चों की संख्या को देखे तो निरंतर वृद्धि हो रही है जहां 2014 में आत्महत्या की दर 6.1 प्रतिशत थी वहीं वर्तमान में 8.8 प्रतिशत दर्ज की गई है जो यह बताती है की हर बर्ष करीब 0.3 से 0.5 प्रतिशत की वृद्धि है वर्तमान में बच्चों पर इस क़दर मानसिक दबाव है की वो झेल नहीं पाते और आत्महत्या जैसा पाप स्वीकार कर अपनी जीवन लीला को समाप्त कर लेते हैं, और अपने पीछे छोड़ जाते हैं माता-पिता के आंसू तथा आत्माहत्या करने का विश्लेषण व आंकड़े। यदि हम बच्चों का भविष्य बचाना चाहते है, तो बच्चों के लिए आपको समय देना ही होगा। हालांकि शासन अपने स्तर पर नई शिक्षा नीति 2020 में माता-पिता की भागीदारी को सुनिश्चित करना तय किया है जिसके तहत स्कूल के बीच की दूरी को मिटाना और शिक्षा केवल स्कूल की जिम्मेदारी नहीं बल्कि माता-पिता के बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी और सलाहकार के रूप में उनकी भूमिका को तय करना ताकि माता-पिता को बच्चों की पसंद, क्रियाकलाप का बचपन से ही पता चल सके क्योंकि सीखने का मुख्य आधार घर का माहौल होता है इसमें माता-पिता को घर पर खेल-खेल में सीखने का माहौल बनाने के लिए प्रोत्साहित करना एवं बच्चों की पसंद और नापसंद को बताना जिसके तहत प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए एफएलएन मेला का लगाना जो प्रोत्साहित की एक कड़ी है क्योंकि शिक्षकों और माता-पिता के बीच केवल मूल्यांकन कार्ड बांटने तक सीमित न रहकर बच्चों की संपूर्ण प्रगति पर नियमित और सार्थक चर्चा करना भी है तथा शिक्षा के मूल्य और संस्कृति का हस्तांतरण शिक्षा को भारतीय मूल्य और स्थानीय संस्कृति से जोड़ने के लिए अभिभावकों को स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रम और गतिविधियों में शामिल करना भी सुनिश्चित किया गया है ताकि बच्चों के सीखने के तनाव को काम किया जा सके रटन की प्रणाली को खत्म कर समझ आधारित शिक्षण को बढ़ावा देना है एवं माता-पिता को यह भी ज्ञात रहे कि बच्चों पर अंको का दबाव न डालते हुए उनके कौशल और वास्तविक समझ को महत्व देकर उन्हें प्रोत्साहित कर उस क्षेत्र में आगे बढ़ाने हेतु सहयोग प्रदान करना महत्वपूर्ण है यदि आज फिर से हर घर एक पाठशाला बन जाए, तो किसी भी बच्चे के सपने कभी अधूरे नहीं रहेंगे।

बालक, पालक, शिक्षक मिल सब इक साथ चले।
जग में फिर जीवन का हर पाठ सदा उजले।।
शिक्षा का आधार तभी मजबूत बनेगा,
हर घर एक पाठशाला बनने मन मचले।।



**पूर्व सैनिक प्रमोद कुमार चौहान,**
**कुरवाई विदिशा मध्यप्रदेश**

## कर्म कभी हार नहीं मानता, इसलिए सत्कर्म और सत्य का मार्ग कभी न छोड़ें - मुनिश्री साध्य सागर



**आष्टा।** नगर के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन दिव्योदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र (किला मंदिर) में विराजमान आचार्य विशुद्ध सागर महाराज एवं आचार्य विराग सागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य वात्सल्य रत्नाकर मुनिश्री 108 साध्य सागर महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि कर्म सबसे बड़ा बलवान होता है और कर्म कभी हार नहीं मानता। इस लिए मनुष्य को सदैव सत्कर्म, सत्य और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए।

प्रवचन की जानकारी देते हुए समाज के नरेन्द्र गंगवाल ने बताया कि मुनिश्री ने कहा कि तीर्थंकर भगवान, महापुरुष, बलभद्र,नारायण और भगवान श्रीकृष्ण जैसे महान व्यक्तित्वों का भी कर्म ने साथ नहीं छोड़ा, उन्हें कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ा। कर्म का सिद्धांत अटल और शाश्वत है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को अरिहंत भगवान की भक्ति और निर्ग्रन्थ मुनिराजों को आहारदान जैसे दुर्लभ पुण्य कार्यों का अवसर मिले तो उसे सौभाग्य मानकर ग्रहण करना चाहिए। मुनिश्री साध्य सागर महाराज ने कहा कि आज का मनुष्य तनाव से घिरा हुआ है। तनाव के कारण उसकी कार्यक्षमता लगातार घटती जाती है और कई शारीरिक बीमारियों का कारण भी मानसिक तनाव बनता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि यदि किसी दुश्मन व्यक्ति को परेशान करना हो तो उसके मन में चिंता भर दीजिए, वह उसी में उलझा रहेगा। लेकिन स्वयं के जीवन में और अन्य को भी कभी चिंता और तनाव को स्थान नहीं देना चाहिए। उन्होंने कहा कि सच्चा धार्मिक व्यक्ति वही है जो संसार की नहीं, बल्कि भगवान की वाणी को सुनता है। यदि आपका मार्ग सत्य का है और आपकी क्रिया धर्मानुकूल है तो संसार कुछ भी कहे, उससे विचलित नहीं होना चाहिए। तीनों लोक के नाथ भगवान के ज्ञान पर अटूट श्रद्धा रखने वाला व्यक्ति कभी भयभीत नहीं होता। चाहे उसके सामने दस सिर वाला रावण ही क्यों न आ जाए, उसे डरना नहीं चाहिए, क्योंकि भगवान ने अपने कर्मों पर विजय प्राप्त की है। मुनिश्री साध्य सागर महाराज ने कहा कि मंदिर को कभी अपनी संपत्ति नहीं समझना चाहिए।गाड़ी,बंगला या कारखाना अपना हो सकता है, लेकिन मंदिर भगवान का है। उन्होंने कहा कि जीवन में किसी निमित्त को दोष देने के बजाय धैर्य और विश्वास बनाए रखना चाहिए। धैर्य से ही श्रद्धा और आत्मबल बढ़ता है।उन्होंने श्रद्धालुओं से देव, शास्त्र और गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा बनाए रखने का आह्वान करते हुए कहा कि जो व्यक्ति स्वयं दान देने में सक्षम नहीं है, यदि वह दान करने वालों की अनुमोदना भी करता है तो उसे भी पुण्य फल की प्राप्ति होती है। दान का भाव ही वैभव को बढ़ाने वाला होता है। इसलिए दान देने वालों की प्रशंसा और अनुमोदना अवश्य करनी चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि पति तो हर कोई बन जाता है, लेकिन संघपति बनने का सौभाग्य बहुत कम लोगों को मिलता है। जो लोग मुनि संघ की व्यवस्था और धर्मकार्य में सहयोग करते हैं, उनकी अनुमोदना करने से भी पुण्य की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि यदि जीवन में अनुमोदना का भाव रहेगा तो शिकायत का अवसर नहीं आएगा और भगवान से भी कभी शिकायत नहीं करनी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि अनेक लोगों को अपने घर से ही भगवान के दर्शन का सौभाग्य मिलता है, तो कुछ लोग प्रतिदिन मंदिर पहुंचकर दर्शन करते हैं। लेकिन केवल भगवान को देखने तक ही सीमित न रहें, बल्कि भगवान जैसा बनने का भाव भी मन में उत्पन्न करें। जैन दर्शन की महानता इसी में है कि वह आत्मकल्याण का मार्ग दिखाता है। मुनिश्री ने कहा कि भगवान का ज्ञान तीनों लोकों को प्रकाशित करता है। जितने अधिक धार्मिक अनुष्ठान होंगे, उतनी ही धर्म और पुण्य की वृद्धि होगी। वर्तमान समय में मनुष्य लोभ और लालच से अधिक प्रभावित है, जबकि धर्म के क्षेत्र में लोभ का कोई स्थान नहीं है। यदि दान देने की सामर्थ्य होते हुए भी व्यक्ति उसे छिपाता है, तो धीरे-धीरे वह दान देने योग्य भी नहीं रह जाता।उन्होंने अंत में सभी श्रद्धालुओं से भगवान की विनय, आराधना और भक्ति को जीवन का नियमित हिस्सा बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि ÷श्री जिनाय नमोस्तु तुभ्यम÷ का स्मरण करते हुए धर्ममय जीवन अपनाएं। धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे और मुनिश्री के मंगल आशीर्वचन का लाभ प्राप्त किया।

## के.सी. मालू-बुझ गया राजस्थानी संगीत का सितारा, छोड़ गए अमर विरासत



रामस्वरूप रावतसरे

**राजस्थान के लोक संगीत की पहचान जब भी देश और दुनिया में होगी, तो उसमें केशरी चंद उर्फ के.सी. मालू का नाम हमेशा सम्मान के साथ लिया जाएगा। उन्होंने केवल एक सफल उद्योगपति के रूप में नहीं, बल्कि लोक संस्कृति के संरक्षक और राजस्थानी संगीत के सबसे बड़े संवाहकों में से एक के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई। एक समय था जब राजस्थानी लोकगीत सीमित दायरे तक ही सुनाई देते थे, लेकिन के.सी. ने उन्हें कैसेट्स के माध्यम से घर-घर तक पहुंचाया और लाखों लोगों को अपनी मिट्टी की खुशबू से जोड़ दिया। वीणा कैसेट्स और बाद में वीणा म्यूजिक के जरिए उन्होंने हजारों लोकगीतों, भजनों और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का ऐसा अभियान चलाया, जिसने राजस्थानी संगीत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।**

के सी मालू के प्रयासों से कई लोक कलाकारों को मंच मिला और राजस्थान की लोक परंपराएं राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने में सफल रहीं। सोमवार देर रात दिल्ली में हृदय गति रुकने से 80 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। उनके जाने से न केवल राजस्थान का उद्योग जगत, बल्कि लोक संगीत, संस्कृति और कला जगत ने भी अपना एक ऐसा संरक्षक खो दिया, जिसने जीवनभर अपनी मातृभूमि की सांस्कृतिक विरासत को संजोने और आगे बढ़ाने का कार्य किया। उनका योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। 1946 में चूरू जिले के सुजानगढ़ में जन्मे केशरी चंद मालू ने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की। इसके साथ ही उन्होंने साहित्य रत्न और जैन सिद्धांत रत्न की उपाधियां भी हासिल कीं। शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने व्यवसाय के साथ संस्कृति और लोक संगीत को अपना मिशन बना लिया। खास बात यह है कि महज चार दिन पहले, 10 जुलाई को उन्होंने चाल साथ बागां में चालां नाम से नया राजस्थानी एल्बम रिलीज किया था। यह उनका अंतिम संगीत उपहार बन गया। जब कैसेट का दौर शुरू हुआ, तब के.सी. मालू ने वीणा कैसेट्स की स्थापना कर राजस्थानी लोक संगीत को नई दिशा दी। उस दौर में उन्होंने ऐसे लोकगीत रिकॉर्ड किए, जो आज भी राजस्थान के हर घर, हर शादी और हर सांस्कृतिक आयोजन का हिस्सा हैं। माना जाता है कि राजस्थानी लोक संगीत को टेप रिकॉर्डर तक पहुंचाने और उसे लोकप्रिय बनाने में सबसे बड़ा योगदान के.सी. मालू का रहा। आज भी वीणा म्यूजिक राजस्थानी लोक संगीत का सबसे बड़ा और सबसे भरोसेमंद ब्रांड माना जाता है।

जानकारों के अनुसार के.सी. मालू ने बिना किसी सरकारी सहायता के 5,000 से अधिक राजस्थानी लोकगीतों की पांडुलिपियां, ध्वनिलिपियां तैयार करवाईं और उनकी ऑडियो रिकॉर्डिंग करवाई। उन्होंने लोक संस्कृति के संरक्षण को केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि अपनी सामाजिक जिम्मेदारी माना। उनके प्रयासों से राजस्थान की लोक परंपराएं नई पीढ़ी तक पहुंच सकीं। के.सी. मालू केवल संगीत निर्माता नहीं थे, वे प्रतिभाओं के पारखी भी थे। उन्होंने सैकड़ों नवोदित कलाकारों को मंच दिया, उन्हें पहचान दिलाई और उनके जीवन में रोजगार तथा सम्मान के नए द्वार खोले। आज राजस्थान के अनेक प्रतिष्ठित लोक कलाकार उनके प्रति कृतज्ञ हैं क्योंकि उनके जीवन की पहली बड़ी पहचान वीणा म्यूजिक के माध्यम से ही बनी। उनकी दृष्टि केवल रिकॉर्डिंग तक सीमित नहीं थी। उन्होंने लोक संस्कृति को सामाजिक आंदोलन का रूप दिया। सुर-संगम संस्थान की स्थापना कर देशभर में संगीत प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं, हजारों युवाओं को भारतीय संगीत से जोड़ा, पाँच हजार युवतियों को घूमर का प्रशिक्षण दिलाया और लोक परंपराओं को उत्सव का स्वरूप दिया। 1987 में राजस्थान में पड़े अकाल के दौरान उन्होंने 'लता मंगेशकर नाइट' का आयोजन कर करीब एक करोड़ रुपए राहत कार्यों के लिए जुटाए, जो उस समय एक बड़ी उपलब्धि मानी गई थी। वहीं, महान संगीतकार नौशाद के साथ मिलकर उन्होंने राजस्थानी लोक संगीत को नए आयाम दिए। उनके प्रोड्यूस किए गए 'घूमर', 'चीरमी' और 'कांगसियो' जैसे एल्बम आज भी लोक संगीत के क्लासिक संग्रह में शामिल हैं। उन्होंने राजस्थानी लोक धुनों और दुर्लभ गीतों को संकलित कर गायिका सीमा मिश्रा सहित कई लोक कलाकारों की आवाज में प्रस्तुत किया। गोरबंद, घूमर' और पिपली जैसे एल्बम आज भी राजस्थानी संगीत प्रेमियों की जुबान पर हैं। उनके प्रयासों से राजस्थान का लोक संगीत देश ही नहीं, विदेशों तक अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहा।

के.सी. मालू संगीत के साथ-साथ राजस्थानी भाषा और संस्कृति के संरक्षण के लिए भी सक्रिय रहे। उन्होंने राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने की मुहिम का भी खुलकर समर्थन किया। उनके निधन के साथ राजस्थानी लोक संस्कृति का एक ऐसा अध्याय समाप्त हो गया, जिसने परंपरा को आधुनिक तकनीक से जोड़कर नई पीढ़ी तक पहुंचाने का ऐतिहासिक काम किया। संगीत जगत उन्हें हमेशा उस व्यक्ति के रूप में याद करेगा, जिसने वीणा के सुरों से राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को अमर बना दिया। के.सी. मालू ने 221 राजस्थानी विवाह गीतों का एक अनूठा संकलन तैयार किया, जिसे हिंदी, अंग्रेजी और राजस्थानी भाषा में प्रकाशित किया गया। इसके साथ 24 ऑडियो-वीडियो सीडी भी जारी की गईं। इसे विश्व का सबसे बड़ा विवाह गीत संग्रह माना जाता है।

राजस्थानी लोक संगीत और संस्कृति के संरक्षण में अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें राजस्थान रत्न सम्मान से नवाजा गया। इसके अलावा राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें 'समग्र कला साधना अवॉर्ड' और महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन ने 'डागर घराना अवॉर्ड' से सम्मानित किया। के.सी. मालू का जीवन इस बात का उदाहरण है कि यदि किसी व्यक्ति में अपनी संस्कृति के प्रति समर्पण हो, तो वह उसे पूरी दुनिया तक पहुंचा सकता है। यही उत्कृष्ट कार्य के सी मालू ने किया। राजस्थानी लोक संगीत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में उनका योगदान हमेशा याद किया जाएगा।

आज जब के.सी. मालू हमारे बीच नहीं हैं, तब उनकी बनाई हुई धुनें, उनके संरक्षित गीत, उनके प्रोत्साहित कलाकार और उनके सपनों से निर्मित सांस्कृतिक संसार उन्हें सदैव जीवित रखेंगे। राजस्थान की किसी भी लोकधुन में जब घूमर की ताल बजेगी, किसी विवाह में पारंपरिक गीत गूंजेंगे या कोई युवा कलाकार मंच पर अपनी पहली प्रस्तुति देगा, तब कहीं न कहीं के.सी. मालू की साधना की प्रतिध्वनि सुनाई देगी। राजस्थान ने आज केवल एक संगीत मर्मज्ञ नहीं खोया है, बल्कि अपनी लोक-सांस्कृतिक चेतना का एक महान प्रहरी खो दिया है। उनकी स्मृति को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम उस लोक विरासत को संजोए रखें, जिसे बचाने के लिए उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। के.सी. मालू स्वयं भले ही मौन हो गए हों, लेकिन उनकी संजोई हुई लोकधुनें आने वाली पीढ़ियों तक राजस्थान की आत्मा का संगीत बनकर गूंजती रहेंगी और उनके दोनों पुत्र हेमजीत मालू और प्रसन्नजीत मालू उनके अधूरे सपनों को साकार करने में कामयाब रहेंगे।

## शासकीय विधि महाविद्यालय में दीक्षारंभ (इंडक्शन) समारोह का आयोजन

**नागदा (धार)। आज शासकीय विधि महाविद्यालय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए दीक्षारंभ (इंडक्शन) समारोह का सफल आयोजन किया गया, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदीप सोनी जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण रहे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में डॉ. एस.एस. बघेल प्राचार्य पीएम एक्सीलेंस कॉलेज, धार तथा हर्षवर्धन चौहान लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य नवप्रवेशित विद्यार्थियों का महाविद्यालय परिवार में औपचारिक स्वागत करना तथा उन्हें महाविद्यालय की शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं अनुशासनात्मक व्यवस्थाओं से अवगत कराना था।**



कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। महाविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. विध्यांशी भवार ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए विधि शिक्षा के महत्व, संविधान के आदर्शों तथा एक जिम्मेदार नागरिक एवं सफल विधि व्यवसायी बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने विद्यार्थियों से नियमित अध्ययन, अनुशासन एवं नैतिक मूल्यों के पालन का आह्वान किया। इस अवसर पर अतिथियों ने विद्यार्थियों को विधि शिक्षा के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य के महत्व के प्रति भी जागरूक किया। उन्होंने विद्यार्थियों से तनाव प्रबंधन, सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास, भावनात्मक संतुलन तथा आवश्यकता पड़ने पर परामर्श लेने के महत्व पर बल देते हुए स्वस्थ मानसिक अवस्था को शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत सफलता का आधार बताया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापकों द्वारा पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली, पुस्तकालय, मूट कोर्ट, विधिक सहायता गतिविधियों तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। साथ ही विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया गया। कार्यक्रम के समापन पर सभी नवप्रवेशित विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी गईं तथा धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ।